PART-**1**

रोमन भूगोलवेत्ता- पोम्पोनियस मेला

षडॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा

(2) पोम्पोनियस मेला (Pomponius Mela)

पोम्योनियस मेला (प्रथम शताब्दी) दक्षिणी स्पेन के निवासी और रोमन भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने भौगोलिक तथ्यों की जानकारी के लिए तत्कालीन ज्ञात कुछ स्थानों की यात्राएं भी किया था। उन्होंने अपनी यात्रा का वर्णन अपनी पुस्तक में किया है। मेला ने पहले भूमध्य सागर के समीपवर्ती क्षेत्रों की यात्रा किया और बाद में इटली, यूनान, स्पेन, फ्रांस, सीरिया आदि देशों के अनेक स्थानों की यात्राएं किया।

पोम्पोनियस मेला ने लैटिन (स्पेनी) भाषा में छोटी-बड़ी कई पुस्तकें लिखा था जिनमें निम्नांकित तीन विशेष महत्वपूर्ण हैं-

(i) ब्रह्मांड विज्ञान (Cosmography)- मेला ने अपनी कास्मोग्राफी नामक पुस्तक में ब्रह्मांड के विषय में विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है। उन्होंने पृथ्वी को ब्रह्मांड के मध्य में स्थित बताया है। इसमें पृथ्वी के ग्रहीय सम्बन्धों का विवरण है।

(ii) डिकोरोग्राफिया (Dechorographia)- इस पुस्तक में पृथ्वी को पाँच बृहत् कटिबंधों में विभक्त किया गया है-1. उष्ण कटिबंध, 2. उत्तरी शीतोष्ण कटिबंध, 3. दक्षिणी शीतोष्ण कटिबंध, 4. उत्तरी शीत कटिबंध, और 5. दक्षिणी शीत कटिबंध। इस पुरतक में उत्तरी शीतोष्ण कटिबंध का भौगोलिक वर्णन किया गया है। इसमें मेला की भौगोंलिक, यात्राओं का भी वर्णन सम्मिलित है।

(ii) स्काईलैक्स (Skylax) – इसमें भूमण्डल के विभिन्न प्रदेशों का संक्षिप्त भौगोलिक वर्णन है। इसमें मेला ने पृथ्वी के दो ध्रुव – उत्तरी और दक्षिणी बताया है। उन्होंने यह भी लिखा है कि पृथ्वी के पाँच बृहत कटिवंधों में से केवल दो कटिबन्धों-उत्तरी शीतोष्ण कटिबंध और दक्षिणी शीतोष्ण कटिबंध में ही मानव निवास के अनूकूल दशाएं पायी जाती हैं और मानव निवास के लिए उपयुक्त ये कटिबंध चारों ओर से जल (समुद्र) से घिरे हुए हैं। ये जलीय क्षेत्र हैं- भूमध्य सागर, हिन्दमहासागर, सीथियन सागर और अनंत सागर।